* निदानात्मक परीक्षण *

एक कक्षा में सभी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियां या शिक्षा अर्जित करने की क्षमता एक सी नहीं होती। अध्यापक कक्षा में विभिन्न छात्रों के शैक्षिक-बौद्धिक स्तर को जानने के लिए निदानात्मक परीक्षण करवाता है जिससे छात्रों की शैक्षिक प्रगति में आने वाली कठिनाइयों व कमियों का पता चलता है। इस प्रक्रिया को शैक्षिक निदान के रूप में जाना जाता है।

"शैक्षणिक निदान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा लक्षणों के आधार पर बालक-बालिकाओं की कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त होता है।"

नैदानिक परीक्षण एक ऐसा शैक्षिक उपादान है जिसके आधार पर पठित विषय-वस्तु की सूक्ष्म से सूक्ष्म इकाई में बालक की इकाईगत विशिष्टता एवं कमियाँ परिलक्षित होती है। अतएव नैदानिक परीक्षणों का प्रमुख उद्देश्य विशिष्ट विषय-वस्तुगत अधिगम इकाई में प्राप्त गुणों के आधार पर अभिभावक एवं बालकों को शैक्षणिक विकास व्यावसायिक एवं व्यैक्तिक परिष्कार तथा अध्यापक को अपनी अध्यापन-प्रक्रिया में समुचित सुधार हेतु परामर्श प्रदान करना है।

इस प्रकार नैदानिक परीक्षण में प्राप्तांकों के आधार पर हम विशिष्ट पाठक की विषय-वस्तुगत विशिष्ट अधिगम इकाईगत कमजोरी अथवा विशिष्टता के आधार पर न केवल अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाते है वरन् अध्यापन विधि में यथोचित परिवर्तन लाते है।

विशिष्ट बालक गत कमजोरी एवं कमी के सुधार हेतु अध्यापक को अपनी अध्यापन विधि

Scanned with CamScanner

में तथ्य बालकानुकूल एवं बालकोपयोगी परिवर्तन लाना पड़ता है तथा बालक अपनी योग्यतानुकूल अधिकतम अधिगम अनुभव प्राप्त कर सकता है। इस अध्यापन प्रक्रिया को उपचारात्मक अध्यापन कहते है।

इस प्रकार नैदानिक परीक्षण में प्राप्त अंको के आधार पर बालको की विशिष्ट विषय-वस्तु में इकाईगत कमियाँ ही परिलक्षित नहीं होती वरन् समग्र अध्ययन - अध्यापन प्रक्रिया में उपचारात्मक एवं अधिकतम गुणात्मक विकास हेतु परिवर्तन भी लाया जाता है। इस दृष्टिकोण से नैदानिक परीक्षण के संचालन का प्रमुख उद्देश्य विशिष्ट विषय-वस्तु इकाईगत प्रभावोत्पादक उपचारात्मक अध्यापन विधि विकसित करना है।

* निदान के स्तर (Level of Diagnosis)

शिक्षण में उपलब्धियों एवं परीक्षा परिणामों से कमजोर छात्रों की जानकारी प्राप्त हो जाती है लेकिन इससे यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि उनकी कमजोरियों के प्रमुख कारण क्या है अथवा उनकी अधिगम से सम्बंधित कठिनाइयाँ क्या है? इस प्रकार की जानकारी करने को ही निदान (Diagnosis) कहा जा सकता है।

अतः शिक्षण में छात्रों की कठिनाइयों एवं कमजोरियों अथवा त्रुटियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए जिन परीक्षाओं का प्रयोग किया जाता है, वे नैदानिक अथवा निदानात्मक परीक्षाएं कहलाती है। शिक्षा-शब्दकोश में निदानात्मक परीक्षण अथवा परीक्षा का

Scanned with CamScanner

अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा गया है ——
" निदानात्मक परीक्षण विशेष रूप से उपचारात्मक उपायों के लिए आधार के रूप में छात्रों की विशेष कमजोरियों को सुनिश्चित करने के इरादे से एक सीमित विषय-क्षेत्र अथवा सम्बन्धित उपक्षेत्र में उपलब्धि के मापन हेतु एक परीक्षा है।"
शिक्षण में निदान के निम्नलिखित स्तर हैं —

① समस्या या कठिनाई ग्रस्त छात्र की पहचान —
सर्वप्रथम शिक्षण में समस्या या कठिनाई ग्रस्त छात्रों की पहचान की जाती है।

② समस्या या कठिनाई का कारण —
छात्रों द्वारा की गई त्रुटियों के क्षेत्रों की जानकारी हो जाने के पश्चात उनके कारणों का पता किया जाता है।

③ उपचार — समस्या या कठिनाई के कारण ज्ञात हो जाने के बाद उपचार किया जाता है। चूँकि उपचार के कोई विशेष नियम नहीं हैं वह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करता है।

Scanned with CamScanner

* निदानात्मक परीक्षण की विशेषताएं –

① छात्रों की वांछनीय एवं वास्तविक उपलब्धियों के मध्य दूरी को समाप्त कराने में सहायता करता है।

② इन परीक्षाओं में समय-सीमा पूर्व निर्धारित नही होती है।

③ निदानात्मक परीक्षाओ में छात्रों को अंक नहीं दिए जाते है। इसमें यह जानने का प्रयत्न किया जाता है कि कौन-कौन से प्रश्नों का छात्रों ने समाधान नहीं किया है या किन प्रश्नों को हल करने में उन्होंने कठिनाई महसूस की।

④ छात्रों की कमियों या कठिनाइयों को दूर करने हेतु उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था कराने में मदद करता है।

⑤ यह अच्छे निर्देशन परामर्श एवं शिक्षण हेतु महत्वपूर्ण उपाय सुझाने में समर्थ है।

⑥ इसके द्वारा शिक्षण की किसी विशेष समस्या या क्षेत्र में छात्रों की कठिनाई या कमजोरी का पता करने का प्रयास किया जाता है।

Scanned with CamScanner